मासिक पत्रिका अगस्त 2019

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार वर्मा	विजय भाटिया
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्यसमाज की दृष्टि में योगेश्वर कृष्ण

-कन्हैयालाल आर्य

साभार: परोपकारी- सितम्बर 2018 (द्वितीय)

श्रीकृष्ण जी के सम्बन्ध में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में लिखते हैं-

"श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्तपुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण, श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणर्यन्त, बुरा काम, कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा।"

उनका वास्तविक जीवन और चरित्र महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित ग्रन्थ महाभारत में मिलता है, जहाँ उन्हें अत्यन्त पवित्र, धर्मात्मा, योगीराज, नीतिनिपुण, राष्ट्रनायक, अत्यन्त विनम्र, शास्त्रज्ञ, सर्वप्रिय, निर्भीक वक्ता आदि विशेषणों से विभूषित किया गया है।

श्रीकृष्ण जी भारतीय संस्कृति में कर्म की प्रधानता का उपदेश देने वाले, कर्म के मूर्त्तरूप थे। न केवल भारतवर्ष बल्कि विश्व को कर्म का सन्देश देने वाले और गीता का ज्ञान देने वाले योगेश्वर श्रीकृष्ण जी करोड़ों की आस्था के प्रतीक हैं। श्रीकृष्ण जी की पहचान मात्र गीता या महाभारत से नहीं है बल्कि सारा युग ही उनका था। जब तक वे रहे, अन्याय, अत्याचार, हिंसा, द्वेष, पाखण्ड, अन्धविश्वास और अनाचार के पाँव जमने नहीं दिये। वैदिक विद्वानों ने सदैव महाभारत के आधार पर श्रीकृष्ण के यथार्थ चरित्र को चित्रित किया है जो अत्युत्तम है।

आज भी हमारे समाज का एक बहुत बड़ा भाग श्रीकृष्ण जी को ईश्वर का अवतार मानता है, परन्तु ऐसा नहीं है। वे न तो ईश्वर थे और न ही ईश्वर के अवतार थे। यदि वे ईश्वर होते तो परमात्मा को आत्मा से भिन्न न मानते। गीता में १३वें अध्याय के १२वें श्लोक में उन्होंने स्वयं कहा है-

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते।
अनादि मत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते॥

अर्थात् परमात्मा ओ३म् ही आत्मा के द्वारा जानने योग्य है। उसी को जानकर आत्मा अमृतरस का पान करता है।

गीता में स्वयं श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन को उपदेश करते हुए परमात्मा के अस्तित्व को दर्शाया है। परमात्मा के अस्तित्व को मानने वाला बताइये स्वयं कैसे परमात्मा हो सकता है? कदापि नहीं हो सकता। गीता का अन्तिम श्लोक सारी गीता का निष्कर्ष है। यह श्लोक श्रीकृष्ण जी को ईश्वर का अवतार न मानकर एक महान् पुरुष ही सिद्ध करता है-

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिमर्म॥ (गीता १८/७८)

इस श्लोक में सञ्जय धृतराष्ट्र को कहता है, "हे राजन्! जहाँ योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं और गाण्डीवधारी अर्जुन है वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है। ऐसा मेरा मत है।" सञ्जय के कथन अनुसार यह सिद्ध होता है श्रीकृष्ण और अर्जुन साथ-साथ जिस युद्ध में लड़ेंगे उसमे विजय मिलनी निश्चित है। अर्जुन जहाँ बहुत बलशाली, पराक्रमी व धनुर्विद्या में अतिनिपुण क्षत्रिय था तो वहीं श्रीकृष्ण जी एक अति बुद्धिमान्, राजनीतिज्ञ, धैर्यवान्, विद्वान् तथा दूरदर्शी क्षत्रिय थे। अर्जुन यदि मानव थे तो श्रीकृष्ण महामानव थे।

आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी के महाभारत में वर्णित स्वरूप को मानता है। आर्यसमाज के कृष्ण सर्वगुण सम्पन्न, महान् योगीराज, वेद-वेदांग-स्मृति आदि के ज्ञाता, न्यायशास्त्र व राजनीति में पारंगत, आदर्श राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ, नीतिनिपुण, राष्ट्रनायक, सदाचारी, न्यायकारी, परोपकारी, सद्गृहस्थी, त्यागी, तपस्वी तथा उच्चकोटि के संयमी है।

पुराणपन्थी उनके चित्र की पूजा करके, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन रासलीलायें करके, मन्दिरों में उनसे सम्बन्धित सुन्दर-सुन्दर झाँकियाँ सजाकर, व्रत रखकर अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझ लेते हैं, परन्तु आर्यसमाज उनके चित्र की पूजा न करके उनके चरित्र की पूजा करता है। आर्यसमाज उनको एक महापुरुष मानकर उनके जीवन के गुणों को अपनाने की शिक्षा देता है।

सारे विश्व में अनेक महापुरुष हुए हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। सभी महापुरुषों में अपनी-अपनी विशेषतायें थीं जिसके कारण उन्हें स्मरण किया जाता है, परन्तु श्रीकृष्ण जी वास्तव में अप्रतिम हैं, अनुपम हैं, उनकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। उनके चरित्र के मुख्य गुण निम्नलिखित हैं-

१. योगेश्वर श्रीकृष्ण - स्वयं श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन को उपदेश देते हुए गीता के दूसरे अध्याय के ४८वें श्लोक में योग का अर्थ बताया है-

"समत्वं योग उच्यते" इस उक्ति के अनुसार श्रीकृष्ण जी योगी ही नहीं समदर्शी भी थे।

२. कर्मकुशलता - योगीराज श्रीकृष्ण जी गीता २/५० में कहते हैं-

"योगः कर्मसु कौशलम्" किसी भी कार्य को कुशलतापूर्वक, दत्तचित्त होकर करना ही योग है। श्रीकृष्ण जी कर्म को ही विशेष समझते थे तभी तो अर्जुन को कहते हैं-कर्म करना तुम्हारा कर्त्तव्य है, फल की चिन्ता मत करो।

३. विनम्रता - युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सभी ने अपने -अपने कार्य बाँट लिये, परन्तु श्रीकृष्ण जी ने देखा कि उन्हें कार्य सौंपे जाने के विषय में सब असमंजस में है तो उन्होंने नम्रतापूर्वक निवेदन किया, "मुझे सेवा का कार्य सौंपा जाये, मैं सब अतिथियों के चरण धोऊँगा।"

४. शालीनता और शिष्टता - श्रीकृष्ण जी महान् राजा होते हुए भी जब भी श्री व्यास जी, धृतराष्ट्र, कुन्ती, युधिष्ठिर, भीष्म पितामह, विदुर आदि से मिलते तो उनके चरण-स्पर्श करना न भूलते थे।

५. न्यायप्रिय - चाहे कौरव अत्याधिक शक्तिशाली थे, परन्तु अन्यायकारी कौरवों का साथ न देकर न्याय पर चलने वाले धर्मात्मा पाण्डवों का साथ दिया।

६. वीर, स्वाभिमानी, निर्भीक - शान्ति प्रस्ताव प्रस्तुत करने वाले श्रीकृष्ण जी को दुर्योधन अपमानित करने का प्रयास करता है, वे दुर्योधन को फटकारते हुए उसके भोजन के निमन्त्रण को अस्वीकार करते हैं। स्वयं को कैद करने का प्रयास करने पर श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र को ललकारते हैं और अपने वीर, स्वाभिमानी एवं निर्भीक होने का परिचय देते हैं।

७. निर्लोभी - कंस का वध किया, परन्तु राज्य अपने नाना उग्रसेन को दे दिया। जरासन्ध का वध करके मगध का राज्य उसके पुत्र सहदेव को दे दिया। महाभारत का युद्ध जीतकर हस्तिनापुर का राज्य युधिष्ठिर को दे दिया। उन्होंने लोभरहित होकर अन्याय-अत्याचार को समाप्त किया।

८. कुशल नीतिनिपुण - उन्होंने सज्जनों के साथ शिष्टाचार और दुष्टों के साथ 'शठे शाठ्यम् समाचरेत्' की भावना को न्याय संगत माना।

९. यज्ञप्रिय - गीता ३/१३ में कहा है-सर्वदा सुख चाहने वाले को सदा श्रेष्ठ कर्मों में संलग्न रहना चाहिये। यज्ञ एक श्रेष्ठतम कर्म है। जो यज्ञ के पश्चात् खाता है (यज्ञशेष) अर्थात् अमृत खाता हुआ सब दुःखों से मुक्त हो जाता है।

१०. ओ३म् ही ईश्वर का मुख्य नाम है ऐसा मानना - गीता ८/१४-१५ में कहा है-इसी मेरे प्यारे इष्ट 'ओ३म्' को जो भक्त नित्य नियम से जपता है, वह बार-बार के जन्म तथा मृत्यु के दुःख से बचकर परमगति (मोक्ष) को प्राप्त करता है।

११. आदर्श मित्र - मित्रता निभाना कोई भी श्रीकृष्ण जी से सीखे। मित्र चाहे निर्धन ही क्यों न हो। सुदामा के आने पर उसका न केवल स्वागत किया अपितु उसका धन-धान्य से सम्पन्न कर दिया।

१२. ईश्वरभक्त - प्रतिदिन दोनों समय बड़ी श्रद्धा और निष्ठा से सन्ध्या किया करते थे। यहाँ तक कि दूत के रूप में जब श्रीकृष्ण जी हस्तिनापुर जा रहे थे तो रास्ते में सायंकाल के समय रथ रोककर सन्ध्या की, यह महाभारत में आता है।

अवतीर्य रथात् तूर्णां कृत्वा शौचं यथाविधि।
रथमोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेश सः॥

१३. नारी सम्मान की रक्षा प्रथम कर्त्तव्य आदि - महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सदैव महापुरुषों के निर्मल एवं उज्ज्वल जीवन-चरित्र को संसारके सामने रखा है। महर्षि का यह गुण हमें विरासत में मिला है। अतः हम श्रीकृष्ण जी के वास्तवरिक स्वरूप को समझें। जिस प्रकार श्रीकृष्ण जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सत्य, धर्म और न्याय की स्थापना में व्यतीत कर दिया, उसी प्रकार हम भी अपने चारों ओर फैले हुए अज्ञान, अभाव, अन्याय, अधर्म, आतंकवाद, भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए श्रीकृष्ण जो के गुणों और नीतियों को जीवन में धारण करके वैसा ही आचरण करें, तभी हमारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाना सार्थक होगा। ■■

अगस्त 2019 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
04	आचार्य संजय याज्ञिक (9756777958)	याज्ञिक क्रियाओं का रहस्य।
11	डॉ. सुभाष भास्कर (9871207022)	मन की शान्ति कैसे प्राप्त हो?
18	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	सफल जीवन किस पर निर्भर है?
19-25	**मुख्य समारोह - वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रावणी पर्व** - कार्यक्रम अगले पृष्ठ पर देखें।	

जुलाई मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्रीमती मधु शर्मा	12,000/-	श्रीमती सुदर्शन बजाज	1,100/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	1,000/-
श्री राजेन्द्र पाल माता	7,000/-	श्री आर.के. तनेजा	1,100/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-
श्री जगमोहन	5,000/-	श्रीमती उषा मरवाह	1,100/-	श्री के.के. कौल एवं परिवार	700/-
श्री आत्म प्रकाश रेलन	5,000/-	श्री अशोक चोपड़ा	1,100/-	श्री वेद प्रकाश चावला	600/-
श्री रंजन कुमार रेलन	5,000/-	श्री मूल राज अरोड़ा	1,100/-	श्रीमती शशि भण्डारी	500/-
श्री ध्रुव कुमार	4,000/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-		

अन्य दान :
- ❖ तनेजा फाउण्डेशन C/o श्री आर.के. तनेजा : ₹ 2,00,000/- (अल्ट्रा साउण्ड मशीन)
- ❖ श्री जुगल किशोर खन्ना : ₹ 45,000/- (एयर कंडीशनर - लाइब्रेरी)

वर्षा ऋतु में आहार-विहार

साभार: आयुर्वेद सिद्धान्त रहस्य - आचार्य बालकृष्ण

वर्षा-ऋतु विसर्ग काल के आरम्भ में आती है। इस समय आकाश और दिशाएँ बादलों से युक्त होती हैं वातावरण में हरियाली के साथ-साथ नमी और रूक्षता भरी होती है। नमी के कारण मच्छर-मक्खी आदि जन्तुओं से गन्दगी बढ़ जाती है।

वर्षा-ऋतु की नमी से वात-दोष कुपित हो जाता है ओर पाचन-शक्ति अधिक दुर्बल हो जाती है। वर्षा की बौछारों से पृथ्वी से निकलने वाली गैस, अम्लता की अधिकता, धूल और धुएँ से युक्त वात का प्रभाव भी पाचन-शक्ति पर पड़ता है। गेहूँ, चावल आदि धन्यों की शक्ति भी कम हो जाती है।

इन सब कारणों से व संक्रमण से मलेरिया और फाइलेरिया बुखार, जुकाम, दस्त (आम से युक्त), पेचिश, हैजा, आन्त्रशोध (colitis), अलसक, गठिया, सन्धियों में सूजन, उच्च रक्तचाप, फुंसियाँ, दाद, खुजली आदि अनेक रोग आक्रमण कर सकते हैं।

वर्षा-ऋतु में हल्के, सुपाच्य, ताजे, गर्म और पाचक अग्नि को बढ़ाने वाले खाद्य-पदार्थों का सेवन हितकारक है। ऐसे पदार्थ लेने चाहिए, जो वात को शान्त करने वाले हों। इस दृष्टि से पुराना अनाज, जैसे गेहूँ, जौ, शालि और साठी चावल, मक्का (भुट्टा), सरसों, राई, खीरा, खिचड़ी, दही, मट्ठा, मूँग और अरहर की दाल, सब्जियों में - लौकी, भिण्डी, तोरई, टमाटर और पोदीना की चटनी, सब्जियों का सूप, फलों में - सेव, केला, अनार, नाशपाती, पके जामुन ओर पके देशी आम तथा घी व तेल से बने नमकीन पदार्थ उपयोगी रहते हैं। कच्चा, खट्टा और पाल से उतरा हुआ आम लाभ के स्थान पर हानि करता है। इसी प्रकार पके (बिना दाग वाले) और गूदेदार थोड़े, जामुनों का नियमित रूप से सेवन करने से त्वचा के रोग, फोड़े-फुंसियाँ, जलन और प्रमेह रोगों में लाभ होता है। भुट्टा खाने के बाद छाछ पीने से वह अच्छी तरह पच जाता है। दही की लस्सी में लौंग, त्रिकटु (सोंठ, पिप्पली और काली मिर्च), सेंधा नमक, अजवायन, काला नमक आदि डाल कर पीने से पाचन-शक्ति ठीक रहती है। लहसुन की चटनी व शहद को जल एवं अन्य पदार्थों (जो गर्म न हों), में मिला कर लेना उपयोगी है। इस मौसम में वात और कफ दोषों को शान्त करने के लिए कटु, अम्ल और क्षार पदार्थ लेने चाहिए। अम्ल, नमकीन और चिकनाई वाले पदार्थों का सेवन करने वात दोष का शमन करने में सहायता मिलती है, विशेष रूप से उस समय जब अधिक वर्षा और आँधी से मौसम ठण्डा हो गया हो। रसायन रूप में हरड़ का चूर्ण सेंधा नमक मिला कर लेना चाहिए। इस ऋतु में जल की शुद्धि का विशेष ध्यान रखना चाहिए। जल में तुलसी के कुछ पत्ते और फिटकरी (चावल के दाने के बराबर) पीस कर मिलाने से भी जल शुद्ध हो जाता है। यदि ठण्डे जल में शहद मिला लिया जाए तो और अच्छा हैं शरीर पर उबटन मलना, मालिश और सिकाई करना लाभदायक है। वस्त्र साफ-सुथरे और हल्के पहनने चाहिए। ऐसे स्थान पर सोना चाहिए, जहाँ अधिक हवा और नमी न हो।

आर्य समाज-ग्रेटर कैलाश-1 परिसर में उपलब्ध सेवाएँ एवं मुख्य गतिविधियाँ

सत्संग

दैनिक	महिला	साप्ताहिक
सोमवार से शनिवार प्रात: 6.30 से 7.30	बृहस्पतिवार प्रात: 10.30 से 12.00	रविवार प्रात: 8.00 से 10.00

नोट : समस्त वैदिक संस्कारों के लिए धर्माचार्य आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (मोबाइल : 9899908766) से सम्पर्क करें।

महर्षिदयानन्द धर्मार्थ औषधालय

प्रात: 9.00 से 1.00 सोमवार से शनिवार

- एलोपैथी Allopathy
- होम्योपैथी Homoeopathy
- अल्ट्रा साऊण्ड Ultra Sound
- दन्त चिकित्सा Dental Clinic
- नेत्र चिकित्सा Eye Clinic
- ओरथोपिडिक्स Orthopaedics
- न्यूरोथैरेपी Neurotherapy
- फिजियोथैरपी Physiotherapy
- पैथलोजि प्रयोगशाला Path. Lab
- स्त्री रोग Gynecology
- ई०एन०टी० E.N.T.
- डिजिटल एक्स-रे Digital X-Ray
- कारडियालोजी Cardiology
- ईको ECHO
- ई०सी०जी० E.C.G.
- शल्य चिकित्सा Laparoscopic Surgery
- चर्म रोग (Dermatology - Skin)
- गैसट्रोएंटरोलॉजी Gastroenterology

सुयोग्य डॉक्टरों की देख रेख में आधुनिक मशीनों की सहायता से जन कल्याण के कार्य में संलग्न है।

Medical services provided on charitable basis/moderate charges, with social angle and not with a profit Motive.

अमृत पॉल आर्य शिशु शाला

नर्सरी से पाँचवीं कक्षा तक प्रात: 8.00 से दोपहर 1.40 तक सोमवार से शनिवार

संचालन सुयोग्य अध्यापिकाओं द्वारा

मधुमेह Diabetes	योग (केवल महिलाएं) Yoga (Only Ladies)	योग Yoga	उपनिषद् कक्षाएँ Upnishad Classes
तीसरे बृहस्पतिवार प्रात: 10.00-1.00	सोमवार-शुक्रवार सायं 4.00-5.00	प्रतिदिन प्रात: 6.00-7.00	प्रथम एवं चतुर्थ शनिवार सायं 5.00-7.15

Donations to Arya Samaj are eligible for Deduction U/s 80G of the Income Tax Act.
Donate generously in cash / cheque.
Sponsors solicited for : Medical Aid, Child Education & Eye Cataract Operation.

महर्षि दयानन्द सरस्वती

✆ : 29240762, 46678389
E-mail : samajarya@yahoo.in

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)
ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-110048 Regn. No. 3594/1968
An ISO 9001:2015 Certified Institution

वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व

सोमवार 19 अगस्त से रविवार 25 अगस्त 2019

भाइयों एवं बहनों,

सादर नमस्ते!

आपको जानकर हर्ष होगा कि आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 का वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व उपरोक्त तिथियों में समाज के प्रांगण में आकर्षक कार्यक्रमों के साथ आयोजित किया जा रहा है।

इस अवसर पर वेद कथा के लिये उच्चकोटि के विद्वान् प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी को आमंत्रित किया गया है। विख्यात् भजन गायक पं. दिनेश दत्त आर्य जी एवं श्री अंकित उपाध्याय जी भजन प्रस्तुत् करेंगे।

आप सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित समस्त कार्यक्रमों में उत्साह के साथ सम्मिलित होकर तन, मन एवं धन से सहयोग कर हमें प्रोत्साहित करें।

निवेदक

प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष
विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार वर्मा	विजय भाटिया

महिला सत्संग

प्रधाना	मंत्राणी	कोषाध्यक्ष
अमृत पॉल	रेनू चौधरी	सुधा गर्ग

वेद प्रचार समिति

विस्तृत-कार्यक्रम

यजुर्वेद महायज्ञ

सोमवार 19 अगस्त से शनिवार 24 अगस्त 2019 तक
प्रतिदिन प्रात: 7:00 से 8:30 बजे तक

ब्रह्मा : प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री सहयोगी : आचार्य वीरेन्द्र विक्रम

भक्ति संगीत एवं वेद कथा

सोमवार 19 अगस्त से शनिवार 24 अगस्त 2019 तक
प्रतिदिन सायं 6:30 से 8:30 बजे तक

भक्तिसंगीत : श्री अंकित उपाध्याय (19-21 अगस्त) (सायं 6:30 से 7:30 बजे)
: पं. दिनेश दत्त आर्य (22-24 अगस्त) (सायं 6:30 से 7:30 बजे)
वेद कथा : सायं 7:30 से 8:30 बजे तक
प्रवक्ता : प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

आचार्य रमाकान्त उपाध्याय स्मारक व्याख्यान

दिनांक: बुधवार, 21 अगस्त 2019 (सायं 7:15 से 8:30 बजे तक)

विषय : महर्षि दयानन्द की दृष्टि में भारतीय दर्शन
अध्यक्ष : प्रो. शशिप्रभा कुमार, पूर्व कुलपति, सांची विश्वविद्यालय
वक्ता : प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, प्रख्यात वैदिक विद्वान्
विषय प्रवर्तन : आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र, परामर्शदाता, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
संयोजक : प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय

महिला सम्मेलन

दिनांक: बृहस्पतिवार, 22 अगस्त 2019 (प्रात: 10:30 से दोप. 12:30 तक)

अध्यक्षता : श्रीमती सन्तोष मुंजाल जी
यज्ञ एवं भजन : ब्रह्मा आचार्य वीरेन्द्र विक्रम प्रात: 10:30 से 11:15 तक
प्रवक्ता : प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री प्रात: 11:15 से 11:45 तक
: डॉ. उमा आर्य प्रात: 11:45 से 12:30 तक
प्रीतिभोज : दोपहर 12:30 बजे से

मुख्य समारोह कार्यक्रम

रविवार, 25 अगस्त 2019

समय : प्रात: 8:00 से दोपहर 1:30 बजे तक

यज्ञ की पूर्णाहुति : प्रात: 8:00 से 9:45 तक
आचार्य वीरेन्द्र विक्रम
ब्रह्मा : प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री
यज्ञशेष एवं प्रसाद : प्रात: 9:45 से 10:15
मंच संचालन : श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा
आशीर्वचन : स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती-प्राचार्य, गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली
: श्रीमती संतोष मुंजाल
अध्यक्ष : पद्म भूषण महाशय धर्मपाल जी, चेयरमैन, एम.डी.एच.
मुख्य अतिथि : श्रीमती मीनाक्षी लेखी, सांसद (लोकसभा)
विशिष्ट अतिथि : श्रीमती शिखा राय
पूर्व अध्यक्षा, स्थाई समिति, दक्षिणी दिल्ली नगर निगम
: मुंजाल परिवार
विशेष आमंत्रित : श्री धर्मपाल आर्य, श्री रामनाथ सहगल, श्री विनय आर्य, श्री अजय सहगल, श्री रजनीश गोयनका, श्री आनन्द चौहान, श्री योगराज अरोड़ा, श्री गुनमीत सिंह, श्री नरेन्द्र घई
भक्ति संगीत : पं. दिनेश दत्त आर्य प्रात: 10:15 से 11:15 बजे तक
प्रवक्ता : डॉ. महेश विद्यालंकार प्रात: 11:15 से 11:45 बजे तक
सम्बोधन : पद्म भूषण महाशय धर्मपाल जी प्रात: 11:45 से 11:55 बजे तक
: स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी प्रात: 11:55 से 12:05 बजे तक
: श्रीमती मीनाक्षी लेखी दोप. 12:05 से 12:15 बजे तक
प्रवक्ता : प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री दोप. 12:15 से 01:15 बजे तक
धन्यवाद : श्री विजय लखनपाल-प्रधान द्वारा दोप. 01:15 से 01:30 बजे तक
प्रीतिभोज : दोपहर 1:30 बजे से